'अंत के दर्शन' की कलात्मक प्रस्तुति रहस्य-रोमांच से भरपूर

अपने असमाधेय आर्थिक संकटों के दुश्चक्र से बाहर निकलने की कोशिश में, आज साम्राज्यवाद, पहले से अधिक संकटग्रस्त होता जा रहा है। यह दुश्चक्र उसके लिए अन्तकारी है। इसी से वह भयभीत भी है। अपनी आसन्न मृत्यु के खतरे से डरा-सहमा साम्राज्यवाद, मृत्यु का दर्शन दे रहा है। इतिहास, विज्ञान, कविता के अन्त की घोषणा करने के साथ ही वह मानव-जीवन के हर क्षेत्र में अंतनामा का दर्शन दे रहा है। 'अंतनामे' के इस दर्शन की कलात्मक प्रस्तुतियों की सांस्कृतिक परिदृश्य पर भरमार हो गयी है। आज पश्चिमी देशों की फिल्मों में– मानव-जीवन की त्रासदियों, समस्याओं से रहित पूंजीवादी व्यवस्था के वैभव, ऐश्वर्य के साथ रहस्य, रोमांच, चौंक-चमत्कार की विषयवस्तु को सनसनी, उत्तेजना और 'समथिंग न्यू' के मूल्यों के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

आजकल पश्चिमी देशों में बन रही अधिकांश फिल्में (जिन्हें तीसरी दुनिया के बाजार मे डब करके परोसा जा रहा है) या तो ऐक्शन फिल्में होती हैं या 'स्टारवार्स' से सम्बन्धित या विज्ञान-गल्प या सभ्यता की पुरानी चीजों की अवैज्ञानिक प्रस्तुति। इनमें कलात्मक प्रयोग व तकनीक तो अपनी ऊंचाइयों को छूते नजर आते हैं लेकिन उनके पीछे रिकार्डतोड़ बिजनेस कर ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमा लेने का ही उद्देश्य रहता है। मीडिया से प्रायोजित समीक्षाएं कराके उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने की कोशिश की जा रही है और आम दर्शकों का एक अच्छा-खासा हिस्सा नये-नये कलात्मक प्रयोगों से अभिभूत होकर उन फिल्मों की तारीफों के पुल बांध रहा है। जबकि इन फिल्मों में मानव-जीवन की समस्यायें और बीती शताब्दी की मानव त्रासदियां नदारद हैं। हालीवुड की पिछले वर्ष की सबसे हिट फिल्म 'फैंटम मेनस' (प्रेत की धमकी) इसका ताजातरीन उदाहरण है। जिसने हालीवुड की टिकट-खिड़की के अबतक के सारे रिकार्ड तोड़-दिये। इस फिल्म में कौतुकपूर्ण सेट के बीच अंतरिक्ष युद्ध का फिल्मांकन था। इसमें डार्थ माडल के डरावने चेहरे के साथ 'गंजन जार-जार बिंक्स' की अबूझ बोली थी। कुल मिलाकर इस फिल्म ने भय ही उत्पन्न किया। कुछ वर्षों पूर्व विज्ञान-गल्प पर निर्मित फिल्म 'ए गैलेक्सी ऑफ टेरर' ने भी कुछ, जिज्ञासा उत्पन्न करने की बजाय दर्शकों को डरा दिया था। 'इंडिपेंडेस डे', 'मिशन इम्पासिबुल', 'द मैट्रिक्स' आदि ऐक्शन फिल्मों में अमेरिकी वर्चस्व को स्थापित करने की कोशिश की गयी तथा 'द सिक्स्थ सेन्स' और 'ग्रीन माइल' जैसी फिल्में भूत-प्रेत, जादू-चमत्कार से परिपूर्ण थीं। 'जुरासिक पार्क,' 'द लॉस्ट वर्ल्ड', गॉडजिला' आदि जैसी फिल्मों में मनुष्य द्वारा विज्ञान की मदद से प्राचीन जीव-जन्तुओं का उदय होकर मानव-जाति को ही नुकसान पहुंचाते दिखाकर विज्ञान को 'वरदान' के बजाय 'अभिशाप' से विभूषित किया गया (जो पूंजीवादी सामाज में, विज्ञान के ऊपर प्रभुत्वशाली शासक वर्ग के वर्चस्व व अधिकार पर पर्दा डालता है)। इससे नियतिवाद और भाग्यवाद का प्रचार ही हुआ।

पिछली शताब्दी का अन्त होते-होते पश्चिमी देशों की फिल्मों का ट्रेंड सेट होने लगा था। रहस्य, रोमांच, चमत्कार के जन्मदाता स्टीवन स्पीलवर्ग ने डिजिटल प्रभाव के जरिये एक के बाद एक नये प्रयोग कर फिल्मों के बाजार में उछाल ला दिया। डिजिटल और 'स्पेशल इफेक्ट्स' के माध्यम से लोगों की रुचियों को बदला जाने लगा और सन् 2000 आते-आते सुख-दुख, राग-विराग, आश्चर्य, कोमलता, उत्साह आदि मानवीय गुणों से युक्त नायक को एक हद तक विस्थापित कर उसका स्थान 'स्पेशल इफेक्ट्स' ने ले लिया। इन फिल्मों में पश्चिमी दुनिया का वैभव-ऐश्वर्य तथा उसका वर्चस्व तो है, लेकिन– अमेरिका में 5 करोड़ बेरोजगारों की फौज, न्यूयार्क की सड़कों पर भीख मांगते लोग, गंदी बस्तियों में रहती एक भारी आबादी, कालों के प्रति गोरों की बर्बरता, नौजवानों में सनक और उन्माद की बढ़ती प्रवृत्ति, अमेरिकी समाज में व्याप्त अलगाव और मित्रविहीनता– यह सब कहां है ?

न सिर्फ फिल्मों में, बल्कि आजकल इंटरनेट पर भी पारलौकिक, गुप्त और रहस्यमयी चीजों के प्रसारण का विस्तार कर उसे एक बाजारू माल बनाया जा रहा है। इस अधोलोक की चीजों को माल बनाकर बेचने से ई-कॉमर्स की दुनिया में उछाल आ गया है। इंटरनेट पर 55 श्रेणियों के 1597 दृश्यों के माध्यम से मृत्यु का व्यापार एकाएक बढ़ गया है। 'डेथक्लाक' कॉम. आपके बारे में चार प्रश्नों के दृश्य की प्रस्तुति के आधार पर आपकी संभावित मृत्यु तिथि घोषित करता है। इसी तरह 'डेथ टेस्ट कॉम.' आपसे कैंसर, टी.बी. आदि बीमारियों सहित पारिवारिक इतिहास, माफिया जुड़ाव, खराब पत्रकारिता, अनिद्रारोग आदि के बारे में सवाल पूछकर अनुमानित शेष आयु बताता है। सुसी स्मिथ प्रोजेक्ट का 'आफ्टर लाइफ कोड्स कॉम.' में एक गुप्त संदेश रहेगा। उनके मरने के बाद गुप्त संदेश के कोड को सबसे पहले खोलने वाले व्यक्ति को वसीयत में 10 हजार डॉलर प्राप्त होंगे। 'फाइनल थाट्स कॉम' में आप, अपनों के लिए 'अन्तिम संदेश' छोड़ सकते हैं।

यह है साम्राज्यवाद के अंत के दर्शन की असलियत। पूंजीवाद के तमाम सकारात्मक मूल्यों के चुक जाने और मान्यताओं के घिस जाने के बाद लौकिक-अलौकिक चीजों को बेचने के साथ ही अब वह मृत्यु का व्यापार कर रहा है। वह मृत्यु की ही बातें कर सकता है भविष्य की नहीं, क्योंकि उसकी मृत्यु सन्निकट है। वह यह सब सिर्फ साजिशाना ढंग से ही नहीं कर रहा है, बल्कि बहुत कुछ उसकी इच्छा से स्वतंत्र भी है। जो उसके अंतर्य के वास्तविक रूप को प्रतिबिम्बित कर रहा है।

● दृष्टि